International Journal of Multidisciplinary Research and Development
Online ISSN: 2349-4182, Print ISSN: 2349-5979, Impact Factor: RJIF 5.72
www.allsubjectjournal.com
Volume 4; Issue 4; April 2017; Page No. 322-323

भारतीय संगीत में बंदिशों की महत्ता

शुभम वर्मा

अतिथि प्रवक्ता, संगीत विभाग, सी0एस0जे0एम0 वि0वि0, कानपुर, उतर प्रदेश, भारत।

सारांश

'बंदिश' का अर्थ है बंधा हुआ। जो रचना किसी राग के चलन के अनुसार स्वरों में, किसी ताल व लय में एवं किसी काव्य में बंधी होती है, उसे बंदिश कहते हैं। सामान्य भाषा में हम बंदिश को सीमा भी कहते हैं। बंदिश का महत्व शास्त्रीय राग संगीत, लोक संगीत, और सुगम संगीत सभी में है। बंदिश एक प्रकार का दर्पण है जिसमें रागों के स्वरूप, उस समय के रीति–रिवाजों का स्वरूप और भगवद् स्वरूप की झाँकी मिलती है। भारतीय संगीत में बंदिश की परम्परा प्राचीन काल से चली आ रही है। संगीत जगत में बंदिशों का बड़ा महत्व है और इसमें कोई अतिशयोक्ति नहीं है कि बंदिश भारतीय संगीत की अर्न्तआत्मा है।

मुख्य शब्द: बंदिश, इकार, उकार, लय, ताल, काव्य, पद, रस, मुखड़ा, सम, रंजकता

प्रस्तावना

हिन्दुस्तानी संगीत में बंदिश की परम्परा अत्यंत प्राचीनकाल से चली आ रही है। बंदिश का अर्थ है बँधा हुआ। प्रबन्ध, बंदिश, गीत, समान अर्थ वाले शब्द हैं। बंदिश राग की एक विशेष आकृति है। जो रचना किसी राग के चलन के अनुसार स्वरों में किसी ताल, लय एवं किसी पद या काव्य में बँधी होती है, उसे बंदिश कहते हैं। राग का विस्तार करने का आधार भी बंदिश होती है। सामान्य भाषा में बंदिश को हम सीमा भी कहते हैं क्योंकि जब राग का प्रस्तुतीकरण होता है तो राग के विस्तारीकरण करने के बाद बंदिश के दायरे में वापस आना होता है और इसी कारण राग समान होने पर भी अलग–अलग बंदिशों की संरचना पर उसके विस्तार का ढंग अलग हो जाता है। पं0 कुमार गंधर्व के शब्दों में–

''बन्दिश व राग संगीत रूपी पुरुष का शरीर व आत्मा है। शरीर का आकार तो सर्वत्र एक सा नहीं हो सकता। इसी तरह बन्दिशें भी एक ही प्रकार की नहीं हो सकती।''[1]

चाहे शास्त्रीय राग संगीत हो, चाहे लोक संगीत, और सुगम संगीत, बंदिश एक प्रकार का दर्पण है जिसमें रागों के स्वरूप, उस समय के रीति–रिवाजों का स्वरूप और भगवद् स्वरूप की झाँकी मिलती है। चूँकि बंदिश शब्द का सम्बन्ध साहित्य से है। अतः संगीत में काव्य और साहित्य दोनों का अविभाज्य सम्बन्ध है। काव्य के शब्द या शब्द समूह और संगीत के सुर, लय और ताल के समन्वय से 'बंदिश' का निर्माण किया जाता है। स्वर, लय और ताल बद्ध रचनायें ही बंदिश कहलाती हैं।

यद्यपि आधुनिक समय में अधिकांश युवा संगीतज्ञों ने अनेक प्रकार की बंदिशों को सीखने तथा उनके संग्रह करने के महत्व की उपेक्षा की है और यही कारण है कि वर्तमान संगीत शिक्षण पद्धति में संगीत शिक्षण पद्धति में एक राग से सम्बन्धित भिन्न–भिन्न बंदिशों को सीखने एवं प्रस्तुतीकरण में उनकी उपयोगिता पर बल नहीं दिया जाता है। शिक्षण मात्र राग के व्याकरण जैसे–थाट, वादी, संचारी, पकड़ आदि बताने तक ही सीमित हैं। जब संगीत शिक्षा गुरु शिष्य परम्परा पर आधारित थी तब गायक गुरु के समक्ष भिन्न–भिन्न रागों की भिन्न – भिन्न बंदिशों को सीखते थे तथा एक राग का विस्तार बंदिश की विभिन्न स्वर संगतियों के माध्यम से होता था। प्राचीन संगीतज्ञों के पास बंदिशों का भारी संग्रह होता था और जिसे सांगीतिक समृद्धि के रूप में जाना जाता था। वर्तमान समय में भी एक ही राग में भिन्न–भिन्न प्रकार की बंदिशों के महत्व को स्वीकार किया जाने लगा है।

एक बंदिश को अच्छी, उचित एवं आकर्षक बनाने तथा उसकी महत्ता को बढ़ाने के लिए कुछ तत्वों का होना अत्यंत आवश्यक है–

1. बंदिश राग के नियमानुसार होनी चाहिए।
2. बंदिश में ताल एवं लय का चयन।
3. बंदिश में राग के रस एवं प्रकृति के अनुसार कार्य।
4. ताल के विभिन्न खण्डों व शब्दों के संयोजन में सामंजस्य।
5. मुखड़े का उठाव व सम का वजन।
6. भाषा की महत्ता।
7. बंदिश की रंजकता।

1. बंदिश राग के नियमानुसार होनी चाहिए–

राग का चलन एवं उसकी शुद्धता का ध्यान बंदिश में रखना आवश्यक होता है क्योंकि राग का चलन एवं बंदिश एक दूसरे के पूरक होते हैं। उदाहरण के तौर पर किसी राग के चलन को देखने से पहले बंदिशों को ही देखा जाता है। आज के विद्यार्थियों को किसी राग में एक बंदिश सिखा दी जाती है जिससे उसे उस राग का विस्तार करने में कठिनाई होती है। अतः हम कह सकते हैं कि राग के पूर्ण स्वरूप को अच्छी तरह दर्शाने व स्पष्ट करने का श्रेय बंदिश को ही जाता है।

2. बंदिश में ताल एवं लय का चयन–

हमारे जीवन में अनुशासन की बड़ी महत्ता है, ठीक उसी तरह लय एवं ताल का स्थान संगीत में महत्वपूर्ण है। किसी गीत के बोलों को नियमित समय के अनुसार जब संगीत में बाँधा जाता है तो इस क्रिया को ताल कहते हैं। रागमाला के अनुसार–

> ''मुख प्रधान– देहस्य नासिका मुख मध्य के
> तालहीनं तथा गीतं नासाहीनं मुख यथा।''[2]

अर्थात् जिस तरह हमारे शरीर में मुख और मुख में नाक की प्रधानता होती है उसी तरह संगीत में ताल की। प्रत्येक ताल व लय की अपनी विशेषतायें व सौन्दर्य होता है। यदि ताल में परिवर्तन होता है तो भाव भी बदल जाता है।

3. बंदिश में राग के रस एवं प्रकृति के अनुसार कार्य–

प्रत्येक राग का किसी न किसी रस से सम्बन्ध होता है। जैसे–राग बसन्त उल्लास की भावना को व्यक्त करता है। मेघ वर्षा ऋतु के आगमन पर आनन्द के भाव को प्रकट करता है और भैरवी के द्वारा प्रेम तथा भक्त की भावना को व्यक्त किया जाता है। ''परम्परागत बन्दिशों का अध्ययन करने पर मालूम पड़ता है कि एक ही राग में इस प्रकार शब्द रचना रची गयी है जिसमें कभी रति, कभी वीरता और कभी करुण संदेश उत्पन्न होता है। एक राग में विलम्बित और द्रुत ख्याल के भाव भिन्न–भिन्न हैं। वियोग और संयोग की श्रृंगार बन्दिश एक ही राग में देखी जा सकती है।''[3]

4. ताल के विभिन्न खण्डों व शब्दों के संयोजन में सामंजस्य–

सम व विषम खण्डों के साथ–साथ शब्दों के वजन से बंदिश की सुन्दरता बढ़ती है। शब्दों की मात्राओं, इकार, उकार आदि को बंदिश में ध्यान रखना चाहिए। ''भाषा के व्याकरण की दृष्टि से शब्दों में जो अक्षर या उच्चारण होते हैं उनकी विवक्षित लघु, गुरु मात्राएँ होती हैं। दीर्घ उच्चारण की दो मात्राएं तथा लघु अक्षर की एक मात्रा होती है। जैसे–मोहन शब्द में मो वर्ण की दो मात्राएं तथा 'ह' एवं 'न' की एक–एक मात्रा होती है। इन शब्द–मात्राओं के ठेके की मात्राओं के साथ यदि संतुलन बंदिश में रखा गया है तो बंदिश को लयदार चाल प्राप्त होगी।''[4]

5. मुखड़े का उठाव व सम का वजन–

जिस प्रकार मनुष्य का मुखड़ा उसकी सुन्दर एवं विशेष छवि को प्रसिद्ध बनाता है ठीक उसी तरह बंदिश का मुखड़ा उसको प्रिय एवं प्रसिद्ध करने के लिए महत्ता रखता है। किसी बंदिश का मुखड़ा उठाव के साथ प्रारम्भ होकर सम पर वजन के साथ आता है तो उस बंदिश की विशेषता होती है। जब ख्याल को प्रस्तुत किया जाता है तो आलाप, बोल–बाँट, स्वराँग, तानों के मध्य जब मुखड़ा बनकर आता है तो वह उस प्रस्तुतीकरण को सही दिशा देने में अहम् भूमिका प्रदान करता है। एक सुन्दर बंदिश में मुखड़े का सुन्दर होना अति आवश्यक है। ''बन्दिश में 'सम' राग के किस स्वर पर रखी गयी है, यह महत्वपूर्ण माना जाता है। प्रत्येक राग का प्राण स्वर होता है। राग में विशिष्ट स्वर–संगति या विशेष स्वरों का संयोजन 'राग–वाचक' या राग का 'मुख्यांग' कहा जाता है। यह स्वर–संगति अगर 'मुखड़े' में या बन्दिश की 'सम' पर हो तब बन्दिश उत्कृष्ट लगती है।''[5]

6. भाषा की महत्ता

ख्याल की बन्दिशों में शुद्ध हिन्दी का अभाव दिखाई पड़ता है परन्तु भोजपुरी, मैथिली, बृजभाषा, अवधी, पंजाबी, मालवी आदि भाषाओं का प्रयोग मिलता है। इसका कारण है कि इन भाषाओं में भाव को प्रकट करने की अधिक क्षमता है तथा इनका उच्चारण सुनने में भी अच्छा लगता है। ''बन्दिश के विषय एवं भाव के अनुकूल नादमय शब्दों का प्रयोग होना चाहिए, जैसे– पियरवा, मितवा, मनहरवा, पिया आदि। वैसे तो ये समानार्थी शब्द हैं लेकिन प्रत्येक का सन्दर्भ तथा भाव–छटा अलग है। बन्दिश के भाव के अनुसार यदि उचित शब्दावली का प्रयोग उसमें हुआ है तो रसोत्पत्ति अधिक परिणामकारक हो सकती है। इसी प्रकार मृदु उच्चारण के नादमय शब्दों से बन्दिश की प्रस्तुति अधिक आकर्षक हो जाती है। ऐसे शब्द–प्रयोग के लिए ब्रज, अवधी, मैथिली, भोजपुरी आदि बोली–भाषाओं की जानकारी बन्दिश–रचनाकार के लिए आवश्यक होती है।''[6]

7. बंदिश की रंजकता

अन्त में हम यह कह सकते हैं कि बंदिश में रंजकता का होना अत्यंत आवश्यक है। उदाहरणार्थ राग की प्रमुख विशेषता हम सभी के चित्त को रंजन करना है। ठीक उसी तरह से बंदिश में आकर्षण व रंजन करने की विशेषता का होना परम आवश्यक है।

संदर्भ

1. प्रो0 भारवडेकर, पं0 कुमार गंधर्व के सांगीतिक विचार, संगीत कला विहार, अप्रैल 1991, पृ0 52–53
2. पं0 विजय शंकर मिश्र, तबला पुराण, पृ0 64
3. सीमा जौहरी, संगीतायन, पृ0 88
4. अभय दुबे, लेख–राग, रस और बंदिश, संगीत, मई 2007, पृ0 7
5. वही।
6. वही।